स्वद्रव्य–परद्रव्य

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

द्रव्य का अर्थ है वस्तु। कोई भी वस्तु मेरी है या परायी है। यह समझना हमारा कर्तव्य है। हम द्वैत के अन्दर जीवित हैं। द्वैत भेद उत्पन्न करता है। द्वैत से अद्वैत बनना है और पर को छोड़कर स्व में अवस्थित होना है। मानव जीवन का लक्ष्य है स्वद्रव्य प्राप्त करना। स्वद्रव्य अपना मकान है और परद्रव्य किराये का मकान है। अपनी वस्तु का उपयोग करके सभी लोग प्रसन्न रहते हैं। परद्रव्य का उपयोग करने में मन में हिचक होती है। मकान मालिक चाहे जब घर से निकाल दें। दूसरे के मकान पर हमारा अधिकार नहीं रहता है। शरीर परद्रव्य है और आत्मा स्वद्रव्य है। आत्मा को जानकर और मानकर कार्य करना चाहिए। जड़ द्रव्य परद्रव्य है। जड़ विनाशी और चेतन अविनाशी है। चेतन आत्मा है। आत्मा सच्चिदानन्द है। सत् का अर्थ अविनाशी है। यह तीनों कालों में एकसमान रहता है।

सृष्टि दो तत्वों से बनी है– चेतन और अचेतन। चेतना का गुण चैतन्य हैं। इस सृष्टि में केवल एक ही तत्व चेतन है, वह तत्व है आत्मा। इसके अतिरिक्त जितने भी तत्व हैं, वे जड़ या अचेतन हैं। जो भी तत्व चेतन दिखलायी देते हैं, वे सभी आत्मयुक्त है। पुरुष या आत्मा को चेतन तत्त्व तथा प्रकृति को अचेतन या जड़तत्त्व कहा गया है। पुरुष चेतन है। चेतन ही विषयों का ज्ञाता तथा द्रष्टा होता है। इसे अचेतन नहीं प्राप्त कर सकता। आत्मा ही वह द्रव्य है जिसमें बुद्धि, सुख–दुःख, राग–द्वेष, इच्छा प्रयत्न आदि गुण रहते हैं। ये गुण शरीर के नहीं आत्मा के ही हो सकते हैं। आत्मा देह, इन्द्रिय आदि से भिन्न है, नित्य और व्यापक है। मन से उसका प्रत्यक्ष होता है तथा मैं जानता हूं, मैं करता हूं, मैं सुखी हूं, मैं दुःखी हूं इत्यादि से आत्मा का अस्तित्त्व प्रकट होता है।

मन अचेतन है, चित्त चेतन है। शरीर अचेंतन है किन्तु चेतना से युक्त होने के कारण चेतना की सारी क्रिया करता है। वैसे ही मन भी अचेतंन है। मन, वचन तथा शरीर तीनो अचेतन हैं

किन्तु चेतना से युक्त होकर चेतना की क्रिया करते हैं। मन पुद्गलों को ग्रहण करता है। हमारे भाव सूक्ष्मतर है तथा मन भी सूक्ष्म है। वे हमारे सामने नही हैं। जो दिखाई देता है वह शरीर है। उसके भीतर एक सूक्ष्म शरीर है तथा उसके भीतर सूक्ष्मतर शरीर है। हम स्थूल को देखते हैं किन्तु यदि सूक्ष्म और सूक्ष्मतम शरीर के बारे मे चिन्तन न करें तो इस शरीर को समझा नहीं जा सकता। स्थूल शरीर का निर्माणं होता है कर्म शरीर के द्वारा और निर्माण मे निमित्त बनती है शरीर पर्याप्ति। वह पुद्गलों को ग्रहण करती है तथा शरीर के निर्माण में सहयोग देती है।

हमारा अस्तित्व चेतन और अचेतन का जटिलतम संयोग है। चेतन है हमारी आत्मा और अचेतन है शरीर। आत्मा अरूप है, अरस है, अगन्ध है और अस्पर्श है, इसलिए वह अदृश्य है। वह शरीर से बंधी हुई है, इस दृष्टि से दृश्य भी है। संसारी आत्मा शरीर मुक्त नहीं रह सकती। वह स्थूल तथा सूक्ष्म किसी न किसी शरीर के आश्रित रहती है। चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम शरीर है। आत्मा और शरीर का सम्बन्ध चिर–पुरातन है। ''सुख–दुःखानुभवसाधनम् शरीरम्'' अर्थात् जिस के द्वारा पौद्गलिक सुख–दुःख का अनुभव किया जाता है, वह शरीर है।

जैन दर्शन की दृष्टि में आत्मा नित्य तथा अनित्य दोनों है। आत्मा का चैतन्य स्वरूप कदापि नहीं छूटता, अतः आत्मा नित्य है। चेतन कभी अचेतन और अचेतन कभी चेतन नहीं बन सकता। आत्म प्रदेशों में परिवर्तन नहीं होता इस दृष्टि से आत्मा अमर है। आत्मा के प्रदेश कभी संकुचित रहते हैं, कभी विकसित रहते हैं, कभी सुख में, कभी दुःख में आत्मा के अनेक प्रकार की अवस्थाएं होती रहती है। इन कारणों से तथा पर्यायान्तर से आत्मा अनित्य है। जैनागमों में पर्यायांश की दृष्टि से आत्मा अनित्य किन्तु द्रव्यांश की दृष्टि से आत्मा नित्य है।

आत्मा शरीर से भिन्न भी है और अभिन्न भी है। स्वरूप की दृष्टि से भिन्न है और संयोग तथा उपकार की दृष्टि से अभिन्न है। आत्मा का स्वरूप चैतन्य है तथा शरीर का स्वरूप जड़ है। इसलिए दोनों भिन्न हैं। संसारावस्था में आत्मा और शरीर का दूध–पानी की तरह, लौह अग्निपिण्ड की तरह एकात्म संयोग होता है। इसलिए शरीर से किसी वस्तु का संस्पर्श होने पर आत्मा में सम्वेदन और कर्म का विपाक होता है। जीव की संसारावस्था व्यावहारिक दृष्टि

से है। शुद्धनय की अपेक्षा से जीव ज्ञानस्वरूप है। जब तक जीव राग–द्वेष, क्रोध–मोह आदि विकारों से ग्रस्त रहता है, तब तक वह संसार में भटकता हुआ, कर्म विपाक को भोगता है। कर्म बन्धनों को तोड़ने के बाद वह लोकाग्र में जा पहुंचता है और शुद्ध चैतन्य में लीन हो जाता है।

जड़ और चेतन स्वतंत्र पदार्थ हैं। शरीर पंचभूतात्मक है। चेतना पंचभूतात्मक नहीं है। चेतना का स्वतंत्र अस्तित्त्व है। चेतना के कारण ही पंचभूतात्मक शरीर चेतनवत् प्रतीत होता है। संसार जड़ और चेतन दो तत्त्वों से मिलकर बना है। आत्मा चेतन तत्त्व है और जड़ पदार्थ गलन, मिलन धर्मा है। जड़ के नियम चेतन पर और चेतन के नियम जड़ पर लागू नहीं होते। आत्मा स्वद्रव्य है और शरीर परद्रव्य है। शरीर नश्वर है और आत्मा शाश्वत है। शरीर पुद्गलों से बना है और आत्मा चेतनमय परमाणुओं का पिण्ड है।